## पद ८३ (राग: भूप - ताल: आदिताल) मन हे भज भज भज शिव सांब सांब सांब सांब ।।ध्रु.।। चंद्रभाल

कंठनील डमरु करीं धरि त्रिशूळ। शोभत गळा रुंड माळ वरी तो

जगदंब दंब ।।१।। जटा गंग भस्म अंग कुंडल कानीं शोभेभुजंग।

सन्मुख उभे श्रृंग भृंग वाजिव शंख भुंब भुंब ।।२।। गोवाहन नेत्र

तीन दशकर जो पंचवदन। माणिक मना जाय शरण टाकुनिया

दंभ दंभ ।।३।। गोवाहन नेत्र तीन दशकर जो पंचवदन। माणिक मना जाय शरण टकुनिया दंभ दंभदंभदंभ।।३।।